गाँव का बच्चा

समीक्षा : अनीता ध्यानी

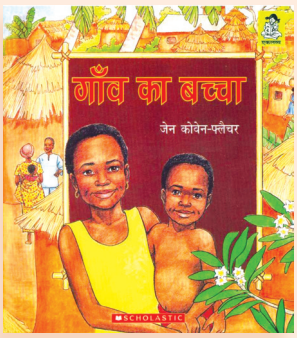

लेखक : जेन कोवेन-फ्लैचर

अनुवाद : अरुंधती देवस्थले

बुक डिज़ाइन : एड्रीएन साइफ्रेट

आयु वर्ग : 6+

पृष्ठ संख्या : 34

भाषा : अँग्रेज़ी (हिन्दी में भी उपलब्ध)

प्रकाशक : एकलव्य के लिए स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

गाँव का बच्चा शीर्षक पढ़ते ही लगता है कि यह कहानी गाँव के बच्चों के भोलेपन, वहाँ के मेहनतकश व कठिनाइयों से जूझते हुए लोगों के जीवनयापन को ध्यान में रखकर लिखी गई होगी। कहानी कुछ ऐसे शुरू होती है, "सूरज धीरे-धीरे ऊपर आकाश में चढ़ने लगा था, लेकिन गाँव के लोग कब के जाग चुके थे", यह पढ़कर लगा, अनुमान सही था। कहानी गाँव के कठिन जीवन की ओर ही बढ़ रही है। यहाँ के लोगों को कितनी सुबह जाग जाना पड़ता है। कहानी में न जाने किन-किन कठिन परिस्थितियों में गाँव के बच्चे को दिखाया गया होगा।

"येमी", माँ ने कहा, "आज तुम बाज़ार में अपने छोटे भाई का ध्यान रखना। मैं तो आम बेचने में बहुत व्यस्त रहूँगी।" तब अनुमान पुख़्ता भी हो गया। कहानी गाँव के कठिन जीवन की ओर ही जाती दिखाई देती है। येमी ने कहा, "आओ कोकू, आज तुम्हारा ध्यान मैं रखूँगी, अकेली मैं!" "तुम अकेली?" माँ ने येमी की तरफ़ देखकर मुस्कुराते हुए कहा। माँ सब जानती थी।

"माँ सब जानती थी।" यह वाक्य अचानक मन में कई सवालों और जिज्ञासाओं को जन्म देता है। माँ क्या जानती थी; माँ, येमी की बात पर क्यों मुस्कुराई होगी; ऐसी कौन-सी बात से येमी अनभिज्ञ है जिसे केवल माँ जानती है?

कहानी की हर पंक्ति रहस्य लिए हुए है। माँ के साथ घर से निकलते हुए येमी को बहुत बड़ी हो जाने का एहसास हो रहा था।

कहानी में गाँव के आपसी भाईचारे और सौहार्द्र की झलक दिखाई गई है। "वे भी झुण्ड में शामिल हो गए।" यह वाक्य गाँव के लोगों की समूह में एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर कार्य करने की भावना को दिखाता है। *गाँव का बच्चा,* गाँव के प्रेम, भाईचारे और अपनत्व की अनुपम कहानी है।

फल बेचने वाली औरतों में से एक ने माँ से कहा, "येमी अब बड़ी हो गई है। कितनी मदद करती है तुम्हारी!" "हाँ," माँ ने कहा, "आज यह कोकू का ध्यान रखेगी।" "अकेली मैं!" येमी ने जोड़ा। इस पर फल बेचने वाली औरत मुस्कुराती है क्योंकि वह भी जानती है कि गाँव के बच्चे 10-12 साल की उम्र में ही बड़े हो जाते हैं। वह परिवार के प्रति ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी समझने लगते हैं। अभी येमी को गाँव के लोगों के व्यवहार के बारे में पूरा पता नहीं है, तभी तो उसे लगता है कि वह कोकू की देखभाल अकेली करेगी। उसके बार-बार "अकेली मैं!" कहने से उसे सौंपी गई ज़िम्मेदारी के प्रति उसकी सजगता और ख़ुशी को दर्शाने में लेखक को सफलता मिली है।

इससे आगे की कहानी में शब्दों से अधिक चित्र बोलते हैं। कहानी के पात्रों में चित्रकार ने ऐसे भाव भरे हैं कि पात्र सजीव हो उठे हैं।

येमी, कोकू को पीठ पर बैठाए बाज़ार घुमाने ले जाती है। कुछ ही देर में कोकू कुनमुनाने लगता है। येमी को लगता है, उसको भूख लगी है। वह कोकू को नीचे उतारकर मूँगफली ख़रीदने लगती है। इतने में कोकू ग़ायब हो जाता है। येमी परेशान हो उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगती है। और यहाँ से खुलता है "अकेली मैं!" का रहस्य।

येमी को फ़िक्र होने लगती है कि कोकू भूखा होगा। लेकिन वह भूखा नहीं था। उसे तो एक महिला अपनी गोद में बिठाकर खाना खिला रही है। येमी को लगता है कि कोकू को प्यास लगी होगी। लेकिन उसे तो एक महिला ख़ुशी से पानी पिला रही है। उसे लगता है कि कोकू डर रहा होगा। लेकिन वह तो मज़े से किसी के पास बैठा हुआ है। येमी, कोकू को दुकानों पर, टोकरों में, मटकों में, पलंग के नीचे, सब जगह ढूँढ़ती है। वह इधर-उधर भटकती है। उसे लगता है कि कोकू को गर्मी लग रही होगी। लेकिन उसे तो गाँव की एक महिला पानी में छपछपाक से नहला रही है।

येमी, कोकू को मुर्ग़ियों, भेड़-बकरियों के बीच ढूँढ़ती है। जब येमी को कोकू नहीं मिलता तो वह ज़ोर से चिल्लाती है, "कोकू खो गया।" लेकिन चित्र कहते हैं, कोकू खोया भी नहीं था। वह तो जहाँ पर येमी थी, उस रास्ते के उस पार सोकर उठ रहा था। चटाईवाले ने

पूछा, "क्या ये है तुम्हारा कोकू?" कोकू को प्यार से उठाते हुए येमी चिल्लाई, "जी हाँ!"

येमी उन सबको धन्यवाद देती है जिन्होंने कोकू का ध्यान रखा था।

इस कहानी को पढ़ते हुए अपना बचपन, गाँव के रिश्ते, काका-काकी, दादा-दादी, ताऊ-ताई, भाई-बहन सभी याद आते हैं। यह रिश्ते कितने सहज और अपनापन लिए होते थे!

यह सच है कि गाँव के बच्चे के पालन-पोषण में पूरा गाँव लगता है। पालन-पोषण ही नहीं, शादी-ब्याह की तैयारी में भी पूरे गाँव का सहयोग होता है। बेटा या बेटी गाँव का है, तब न्योते की धनराशि देकर गाँव का हर परिवार सहयोग करता है। बेटी के ब्याह में पूरे गाँव द्वारा उपहार और गृहस्थी चलाने की वस्तुएँ भेंट की जाती हैं।

कहानी, सीमित शब्दों में असीमित भावों से भरी हुई है। लेखक ने शब्दों में व चित्रकार ने चित्रों में, कहानी की कल्पना के गाँव का पूरा परिदृश्य उकेर दिया है। मानवीय सरोकारों में गुँथी एक बेहतरीन कहानी जो भाईचारे, देखभाल और अपनेपन के मूल्य बोध में पगे ग्रामीण जीवन की आत्मा से रू-ब-रू कराती है।

यह कहानी उन सभी पाठकों को भी ख़ुद के जीवन से जुड़ी हुई महसूस होती है जिन्होंने गाँव का जीवन जिया है, और अब शहरी जीवन में इन्हीं मूल्यों की ख़ुशबू को बिखेरने में जुटे हैं।

अनीता ध्यानी राजकीय इंटर कॉलेज लखवाड़, ब्लाक कालसी, ज़िला देहरादून, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका हैं। वे ढाई दशक से शिक्षा में काम कर रही हैं। उनकी कहानी, कविताएँ एवं लेख लिखने और हिन्दी भाषा शिक्षण में विशेष दिलचस्पी है।

कला से सीखना

समीक्षा : विजय रविकुमार

कला से सीखना ऐसी गतिविधियों का संग्रह है जिसका उपयोग प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक अपनी कक्षाओं में कला के प्रयोग के लिए कर सकते हैं। यह गतिविधियाँ ख़ूबसूरती से डिज़ाइन की गई हैं, और इनमें आसानी से उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किया गया है। जैसे– पौधे और लकड़ियों जैसी प्राकृतिक सामग्रियाँ, पुराने समाचार पत्र जैसी बेकार सामग्री, आदि। इसके अलावा, शिक्षकों के लिए इन गतिविधियों को संचालित करना आसान है और यह बेहद मनोरंजक गतिविधियाँ हैं।

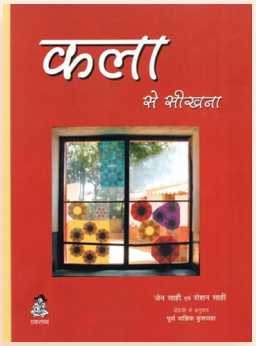

लेखिका : जेन साही
चित्रकार : रोशन साही
भाषा : अँग्रेज़ी और हिन्दी
प्रकाशक : एकलव्य प्रकाशन
पृष्ठ संख्या : 172

पुस्तक में कला की व्यापक परिभाषा दी गई है जिसमें ड्राइंग, पेंटिंग और मूर्तिकला के अलावा खेल, कहानियाँ और अवलोकन से जुड़े अभ्यास भी शामिल हैं। पूरी पुस्तक में दुनिया के बारे में बच्चों के संवेदी अनुभवों पर ज़ोर दिया गया है, और कला मूलतः इसी अनुभव की खोज और अभिव्यक्ति है। वास्तव में, हमारा तात्कालिक संवेदी अनुभव हमारी ख़ुद की और हमारे आस-पास की दुनिया, यानी हमारे परिवार, पड़ोस और समाज के बीच का एक पुल है, और अपने अवलोकन कौशल को विकसित करके हम इसे समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, गतिविधियों की प्रारम्भिक शृंखला में हमारे जीवन में पानी की भूमिका को समझने पर ध्यान दिया गया है।

पहली गतिविधि में, बच्चों को अपने बारिश सम्बन्धी अनुभवों का वर्णन करना होता है, और फिर बारिश के सम्बन्ध में वह जो कुछ भी सोच सकते हैं उसका चित्र बनाना होता है। दूसरी गतिविधि में, उन्हें कहानी सुनाने और चित्र बनाने के माध्यम से अपने जीवन में पानी के स्रोतों और उपयोगों के साथ-साथ इसका संग्रह कैसे किया जाता है, इस पर चर्चा करनी होती है।

तीसरी गतिविधि में, कला निर्माण के लिए पानी को एक सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, इसे पेंट के साथ मिलाना, वैक्स क्रेयॉन रबिंग पर बहने देना, आदि। चौथी और अन्तिम गतिविधि में यह पता लगाया जाता है कि पत्थर और पत्ते जैसी सामग्री एक छोटे-से जलाशय में गिरने पर कैसे व्यवहार करती है। इसके बाद, लकड़ी या काग़ज़ से एक नाव बनाने की चुनौती होती है जो एक छोटे-से पत्थर को उस जलाशय के पार ले जा सके।

पुस्तक की दूसरी इकाइयाँ हवा, अन्तरिक्ष, प्रकाश, भोजन और आश्रय जैसी अवधारणाओं का पता लगाती हैं। साथ ही, यह अत्यधिक रचनात्मक तरीक़ों से अनेक भौतिक सामग्रियों की खोज भी करती हैं।

आख़िरी दो अध्यायों में उन गतिविधियों पर ध्यान दिया गया है जो गणितीय और भाषा कौशल से सीधे सम्बन्धित हैं। दूसरी गतिविधियों की तरह ही, यह गतिविधियाँ भी कला को किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में नहीं, बल्कि इसे बच्चे के आन्तरिक जीवन और बाहरी दुनिया के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखती हैं। मसलन, गणितीय गतिविधियों वाला अध्याय समरूपता और पैटर्न की भावना को बढ़ावा देने के लिए बहुत बढ़िया है, क्योंकि इसमें ऐसे अभ्यास शामिल हैं जो लकड़ी, पत्थर और पत्तियों का उपयोग करने, अपने आस-पास के वातावरण में पैटर्न का पता लगाने और प्रतिक्रिया में अपने ख़ुद के पैटर्न बनाने पर ज़ोर देते हैं।

भाषा पर जो अध्याय है, वह कहानी सुनाने पर केन्द्रित है। इसमें दी गईं गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने घर के अनुभवों से शुरू करके अपनी ख़ुद की कहानियाँ लिखने में मदद करना है। इसके अलावा, दूसरे लोगों की कहानियों पर प्रतिक्रिया देने (और उनके साथ सहानुभूति रखने) से सम्बन्धित गतिविधियाँ भी इसमें हैं– चाहे वे सहपाठी हों या दूर रहने वाले लोग। अन्त में, कठपुतली और मुखौटों का उपयोग करके कहानियों को अभिनीत करने की गतिविधियाँ भी दी गई हैं।

यद्यपि पुस्तक के अधिकांश भाग में विद्यार्थियों के लिए गतिविधियों का विस्तृत संग्रह है, लेकिन इसके आख़िरी अध्याय में शिक्षकों के लिए चर्चा-आधारित गतिविधियों के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में कुछ सवाल पूछे गए हैं। मसलन, शिक्षा में कला का उद्देश्य क्या है; क्या सभी बच्चे कला में अच्छे होते हैं; आदि। हालाँकि इन सवालों के कोई सरल जवाब नहीं हैं, लेकिन यह गतिविधियाँ हमें, शिक्षकों के रूप में, अपनी ख़ुद की धारणाओं पर सवाल उठाने, और कक्षा में क्या सम्भव है, इस बारे में हमारी कल्पनाओं को प्रेरित करने में मदद करती हैं।

पुस्तक के आरम्भ में, लेखिका ने छोटे बच्चों की एकाग्रता के असाधारण स्तर पर चर्चा की है, जब वह अपनी इन्द्रियों से दुनिया के बारे में जानने-समझने की कोशिश करते हैं, फिर चाहे वह गत्ते के बक्से से खेलना हो, चित्र पुस्तक पढ़ना हो, या ख़ुद का चित्र बनाना। *कला से सीखना* में दी गईं गतिविधियाँ एकाग्रता की इस शक्ति का उपयोग करने और इसे ऐसी गतिविधियों में इस्तेमाल में लाने में बहुत फ़ायदेमन्द हैं जो छोटे बच्चों में आत्मविश्वास और (शायद) ज्ञान का भी विकास कर सकती हैं। यह पुस्तक बच्चों के साथ काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक बहुमूल्य संसाधन होगी।

विजय रविकुमार अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में गणित विषय के संकाय सदस्य हैं। उन्होंने एक स्वतंत्र चित्रकार और थिएटर कलाकार के रूप में काम किया है। कोरोना महामारी से पहले वह चेन्नई के एक मछली पकड़ने वाले गाँव उरुर ओल्कोट कुप्पम में बच्चों के लिए कला कक्षाएँ संचालित करते थे।